## दिनांक 2 जनवरी, 1987

संब्ह्रीविव कि से होता / 28-86 / 139. — चूंकि हरियाणा के राज्यपास की राय है कि मैं (1) परिवहन भायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैंनेजर, हरियाणा रोडवेज, कैयल, के श्रीमध्न श्री दीवाकर शर्मा, हैलपर, पुत्र श्री वासिक्षणन शर्मा, विपासी स्थादी भवन गोल मार्किट, नीलोखेड़ी तथा उसके प्रयन्त्रकों के मध्य इसमें इसके दाद सिखित मामले के सम्यन्ध में कोई भीद्योगिष्ठ विवाद है;

और चं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिगंय हैत निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रौधोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपदारा (1) के दण्ड (ग) द्वारा प्रधान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं• 3(44)84-3-श्रम, दिनीध 18 प्रप्रैल, 1984, दरा उक्त प्रविनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यागलय, ग्रम्बाला, को विदादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिला मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो दि उक्त प्रबन्धकों तथा व्यक्ति श्रीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सूचंगत प्रयवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दीक्षकर शर्मा, पत्र श्री बालिकशन शर्मा की सैवाओं द्या समापन न्यायोधित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/कुरुक्षेत्र/17-86/146.—चू कि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० दी शाहबाद को-भोग्नेटिव सूमर मिल्ज लिं० शाहबाद मारकण्डा, के श्रमिक श्री कमला सिंह, मार्फत मधुसूदन शरन कोशिश, लठमारा स्ट्रीट जगाधरी, तथा उसके अवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले क सम्बन्ध में कोई श्रीधोणिक विवाद है;

ग्रीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायिनर्णय हेत् निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रौदोगिक विदाद अधिनियम. 1947, की धारा 10 की छपद्यारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिक्सों का प्रयोग करते अप हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी धिद्यसूचना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांदा 18 अर्थेस, 1984, दारा उक्त श्रिविनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्याला, को दिवादग्रस्त या उससे सुगंगा वा सम्बन्धिन नीवे लिया मामना न्यायिन गेंप एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रदन्धकों सभा श्रमिक के बीव या मो विधादग्रस्त मामना है या विदाद से सुसंगत श्रयचा सम्बन्धित मामना है :--

ल्या श्री कमला सिंह की भेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो द**इ किस राइत का** हकदार है ?

सं० थ्रो० वि०/क्रक्षेत्र/20-86/152.—यु कि हरियाणा के राज्यपाल की राव है कि मैं० मैनेजिंग धायरैक्टर, दी शाहबाद कोपरेटिव शूगर मिल्ज लिमिटिट, शाहबाद मारकण्डा, के श्रमिक श्री शिव नरेण प्रसाद, मार्कत मधुसुदन सरन कोशिश, लठमारा स्ट्रीट, जगाधरी तथा उसके प्रजन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामने में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रंब, ग्रीखोगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रीधिसूचना सं. 3(44)-84-3-अम दिनांक 18 भन्नेज, 1984, द्वारा उत्त श्रीधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्वायालय, ग्रम्बला, को विवाद ग्रस्त या उसके सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्शय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रवाहकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शिव नरेंण प्रसाद की सेथाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 9 जनगरी, 1987

सं० ग्रो॰ वि०/सोनीपत/150-86/162.—चं कि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मैं॰ सरदार सोलवेण्ट इण्डस्ट्रीज, जी०टी॰ रोड, जुण्डभी, सोनीपत, के श्रीमक श्री सरदारी प्रसाद, मार्फत ग्राल इण्डिया जनरल कामगार यूनियन (रिजि॰) कार्यालय, जी.टी. रोड, प्याक मिनवारी, कुण्डभी, सोनीपत तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामरी के सम्दन्ध में दि ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर पृक्षि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेंतु निर्दिष्ठ धरना बांछनीय समझते है ;

इसलिये, मन, मौद्योगिक विवाद मिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों था प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 9641-1-मम-78/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी मिधिसूचना की धारा 7 के मिधीन गठित भम न्यायालय, रोहतक, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं को कि उसर प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या हो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री सरवारी प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राष्ट्रत का हक्तदार है ?

सं भो बिज भी कि पानी | 95-86 | 208 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं (1) सचिव, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, चण्डीगढ़. (2) कार्यकारी अभियन्ता (अप्रेजन दिवि०) हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, नरवाना, जींद, के श्रीमक श्री भोम प्रकाश स्वामी मार्फत श्री के० के० नैयर एच०एस०ई०बी०, स्टाफ यूनियन, 161/III, विद्युत नगर, हिसार तथा उसके प्रवस्थकों के वीच इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भीडोगिक विवाद है;

भीर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यामनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछिनीय समझते हैं।

इसलिये, अब, श्रीधोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपश्वारा (1) के खच्ड (ग) द्वारा त्रदान की गई शक्तिकों का प्रमोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्राम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साब गठित सरकारी श्रीधसूचना की धारा 7 के श्रीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादत्रकत वा उससे युसंगत वा उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद- श्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :---

क्या श्री श्रोम प्रकाश स्वामी की सेवाओं का समापन न्याबोचित तथा ठीव है ? बदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

## दिनांक 9 जनवरी, 1987

संव श्रोव विव /जुमकोव/ 30-86//1134.—चूंकि हरियाना के राज्यवाल की राय है कि मैव (1) परिवहन आयुक्त, हरियाना नाडो है। (2) महाराजात हरियाना राज्य परिवहन, कैयल, के श्रीमक की इन्द्रपाल, पुक्ष श्री राम स्वरूप, 344/14, गोबिन्द नगर काजोनी, पैहोश रोड, कैयल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर मूंजि हरिवाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट ग्ररना बाछनीय समझते हैं।

इसियमें, मन, श्रीवोगिक निवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिम्तवों का प्रयोग परते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिमुन्ता सं० 3(44)84-3-अम, दिमांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की जारा 7 के अजीन गठित श्रम न्यायालय, अन्वाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामना न्यायित एवं पंचाट तीन पास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि छन्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामना है या उक्त विवाद से सुपंगत अववा सम्बन्धित है:---

म्या श्री इन्द्रपाल चालक, पुत्र श्री रामस्वरूप, की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह कि छ राइस का हकदार है ?

सं० थो॰ वि०/पानी/ 23-86/ 1153.--चूकि इरियाणा के शश्यपाल की राम हैं कि नै० (1) प्रबन्धक निदेशक इरियाणा स्टेंट कोपरेटिव लैंड विधलमैंट बैंक लि॰, चश्हीगढ़, के किरक भी बस राज, पुत्र भी गोबिन्द राम, गांव व डा० वापोली तहसील पानीपत विला करनाल तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद मिश्चित सामसे में कोई भीषोगिक विवाद है;

भौर धूंकि हरियाणा े राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ठ करना चाछनीय समझते हैं ;

इसिल्ए, अब. भौद्योगिक विवाद प्रिक्षितियम, 1947, की धारा 10 की स्पद्मारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई धिक्तियों का प्रवोग करते हुए इरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं० 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रेल, 1984. द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम स्थाबालय, श्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे खिद्या पामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मांस में देने हेतु मिर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :──

क्या श्री जनराज ी सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह मिस राहत का हजदार है ?

भार० एस० ग्रम्बाल, उप-संचिव, इरियाणा सरकार, श्रम विभाग।